कहानी

शुभ-अशुभ

- प्रेमिका शेषणी लता

हिंदी अध्ययन विभाग
मानसगंगोत्री, मैसूरु

प्रेमिका शेषणी लता, शुभ-अशुभ,आखर हिंदी पत्रिका,खंड 1/अंक 1/सितंबर 2021,(69-74)

शंख की दहाड़ ने जैसे हर्षित को आखिरी बार आवाज़ दी हो। उसने जल्दी से अल्मारी खोली और सामने पड़ी एक टी-शर्ट उठा ली। जल्दी से कपड़े पहन कर वह बालों में कंघी करने लगा। उसे ध्यान आया कि उसने काले रंग की टी-शर्ट पहन रखी है। उसने तुरंत टी-शर्ट उतारा और अल्मारी में दूसरा शर्ट ढूँढ़ने लगा।

"इस आशा लता को पता नहीं किसने बता दिया कि पूजा के दिन काला कपड़ा नहीं पहनना चाहिए। एक ही बात को कब से पकड़ कर बैठी है", हर्षित बड़बड़ाया

"हर्ष काकू, आजी को आशा लता नहीं, आजी बोलो।" मेज़ के नीचे से आवाज़ आई।

हर्षित ने शर्ट पहनते हुए ज़रा झुककर देखा तो पाया कि उसका सात साल का भतीजा, विवान, टेबल के नीचे पालथी मारकर बैठा उसी कार से खेल रहा है जो वह चार दिन पहले भारत से लाया था। खिलौने जब तक नए हों तब तक बच्चों की जान उसी में बसती है। वह जहाँ-जहाँ जाता, कार उसके साथ-साथ जाती। यहाँ तक कि सोने के समय भी कार उसके हाथ में ही होती।

हर्षित अपने पैरों को मोड़ कर नीचे बैठ गया और अपना दाहिना हाथ विवान की ओर बढ़ाते हुए बोला, "आजी तो वो तेरी है बच्चे। मेरी तो माँ है, माँ।" "मेरी प्यारी माँ!" उसने विवान को गोद में उठाते हुए कहा। उसने पहले विवान के बाएँ गाल को चूमा फिर गाल को हलके से खींचते हुए बोला, "इतनी सुबह उठने के लिए तुझे किसने बोला था? अभी तो सूरज की भी अच्छी तरह आँख नहीं खुली।"

विवान ने मुस्कुराते हुए कहा, "काकू जल्दी चलो। आजी वेट कर रही हैं। उसने मुझे आपको बुलाने के लिए भेजा था। आप नहा रहे थे इसलिए मैं टेबल के नीचे ही बैठकर आपका इंतज़ार करने लगा था।

"चल बेटा। अभी तो तेरी आजी मेरा बैंड बजाएगी; बोलेगी कि विवान इतना छोटा होकर इतनी सुबह उठ सकता है तो तुम क्यों नहीं।" इतना कहते हुए हर्षित विवान को गोद में लिए उस आम के पेड़ की ओर बढ़ गया जहाँ हनुमान जी की कथा हो रही थी।

जून का सर्द महीना। मंगलवार का दिन। सुबह के साढ़े पाँच बजे हैं। बाहर इतनी ठण्ड है कि पंडित से लेकर घर के सभी लोग जैकेट पहने हुए बैठे हैं। आमंत्रित लोगों में से कोई भी नहीं आया है। एक तो इतनी ठण्ड और ऊपर से अंधेरा। ऐसे में आता भी कौन! सब इस ठण्ड में कम्बल ताने सो रहे होंगे। उजाला अभी अच्छी तरह नहीं हुआ है इसलिए बल्ब लगाया गया है। पंडित उसी के रौशनी से मंत्र पढ़ रहे हैं । "क्या सूर्योदय के बाद पूजा शुरू नहीं किया जा सकता था?" हर्षित ने सोचा।

"मैंने माँ को कहा था कि इतने लंबे सफर के बाद मुझे 'जेट लेग' हो सकती है इसलिए पूजा मेरे वापस आने के दो सप्ताह बाद ही रखे। माँ ने भी 'हाँ' कहा था पर यहाँ आने के बाद पता चला कि प्रोग्राम तो कुछ और ही है। अभी हनुमान जी की कथा, इसके दो दिन बाद से तीन दिन के लिए भागवत कथा शुरू हो जाएगी और उसके एक सप्ताह बाद शादी। कैसे हो पाएगा ये सब! मुझे तो सोने से फुर्सत नहीं। कहीं ऐसा न हो कि अपनी शादी वाले दिन मैं मंडप में ही सोने लगूँ। यह सोच वह मुस्कुराया। हर्षित इन्हीं ख्यालों में डूबा हुआ था। उसका ध्यान तब टूटा जब सभी लोग आरती के लिए खड़े हुए। हर्षित को भारत से साम्बेतो, नान्दी आए अभी चार दिन ही हुए थे। वह दो साल बाद अपने परिवार वालों से मिला है। इन दो सालों में कितना कुछ बदल गया था- पिताजी के बाल और ज्यादा सफ़ेद हो गए हैं, माँ पहले से और भी दुबली हो गई है, घर में दो कमरे और बना दिए गए हैं। दोनों बहनें रीता और सुनीता भी साथ में रहने आ गई हैं। और विवान! हर्षित का वो छोट- सा तोतली जबान में बातें करने वाला विवान अब बड़ा हो गया है। और रक्षा! उससे तो अभी तक हर्षित की मुलाकात ही नहीं हुई है। इन दो सालों में वह भी कितनी बदल गई होगी। रक्षा हर्षित की मंगेतर है। दोनों सूवा में एक ही स्कूल में पढ़ाते थे। दोनों ने जब शादी करने की सोची तो इसी बीच हर्षित को भारत में स्कॉलरशिप पर पढ़ने का मौका मिल गया। जाने से पहले उसने दोनों परिवार वालों को आपस में मेल-मिलाप करवा दिया था और वादा किया था कि वापस आने पर वह रक्षा से शादी करेगा। दोनों रोज फोन पर बातें करते थे। स्कूल से छुट्टी न मिलने के कारण रक्षा कथा के लिए नहीं आ सकी। रोट कथा और भागवत कथा के बीच दो दिन मिलते हैं तो हर्षित ने सोचा कि शादी से

पहले सूवा जाकर एक बार रक्षा से मिल आऊँ और उसके लिए जो चीज़ें लाया हूँ उसे दे आऊँ।

हर्षित को पूजा समाप्त होने की जल्दी है। उसका बड़ा भाई, रतीश, यजमान है। आरती के बाद पंडितजी ने उससे पूछा, "हनुमान जी को रोट पसन्द क्यों है?" थोड़ा रुक कर पंडितजी ने कहा, "मैं तुम्हें 'लाइफ लाइन' दे रहा हूँ। तुम चाहो तो अपने परिवार वालों से पूछ सकते हो।" रतीश ने अपनी माँ की ओर देखा।

आशा धीरे से हर्षित के कान में फुसफुसाई, "तुम बताओ।" हिंदी के अध्यापक हो। तुम्हें तो पता होगा।"

"माँ, मैं हिंदी का अध्यापक हूँ इसका मतलब यह नहीं कि मुझे धर्म से संबंधित सारी बातें पता है। हिंदी अध्यापक होने का यह मतलब नहीं कि मुझे धार्मिक भी होना है," हर्षित ने धीरे से कहा।

थोड़ी देर इंतज़ार के बाद जब कोई जवाब नहीं मिला तो पंडितजी ने अपने सवाल का जवाब खुद ही दिया।

पूजा समाप्त होने के बाद हर्षित के पिता, विजय सिंह और आशा पंडित के साथ पंडाल में जा बैठे। उनकी बहु, मेघना और छोटी बेटी, सुनीता, रसोई में प्रसाद निकालने के लिए चली गईं। रतीश अपनी बुआ को लेने के लिए मासीमासी चला गया और हर्षित सूवा जाने की तैयारी में लग गया।

बड़ी बेटी, रीता, विवान को स्कूल भेजने की तैयारी में लग गई। वह जिस कमरे में विवान के स्कूल यूनिफार्म इस्त्री कर रही है वह पंडाल के बिलकुल पास में है। उसी कमरे में हर्षित बैठा अपनी चीज़ें समेट रहा है। रीता की पीठ उसकी ओर है पर उसे आभास है कि पीछे क्या हो रहा है। पंडाल में हो रही बातें कमरे में साफ़ सुनाई दे रही है। रीता जिस मेज़ पर कपड़े इस्त्री कर रही है वह पंडाल से नहीं दिख रहा है इसलिए वहाँ से रीता को देख पाना मुश्किल है।

आशा भागवत की तैयारी के लिए पंडितजी से कई सवाल कर रही थी। इस बार उन्होंने पूछा, "पंडितजी, क्या रीता स्थापना वाले कलश को उठाने में हिस्सा ले सकती है? वह 'वैसी' है।" पंडित रोट का टुकड़ा मुँह में रखते-रखते रुक गए । उन्होंने प्रश्नसूचक दृष्टि से आशा की ओर देखा। "मेरा मतलब है कि उसका···उसका पति गुज़र चुका है···तो क्या वह इस शुभ काम में भाग ले सकती है?" आशा ने रुकते-

रुकते पंडित से पूछा। रीता को आभास हुआ कि हर्षित कमरे से बाहर चला गया है। पंडित ने तुरंत कहा, "हाँ माता जी! इस कार्य में किसी का कोई रोक-टोक नहीं है।"

आगे की बातों पर रीता का ध्यान ही नहीं गया। उसे ऐसा लगा जैसे उसके पति की दोबारा मृत्यु हुई है। इतना दुःख तो उसे अपने पति की मृत्यु पर नहीं हुआ था जितना इस प्रश्न से हुआ है। उसके ज़ख्म को फिर से जैसे कुरेदा गया हो। अगर किसी और ने यह प्रश्न किया होता तो शायद वह सह भी सकती थी पर उसकी माँ! उसकी अपनी माँ को आज लगता है कि उसके होने से कार्य अशुभ हो सकता है। रीता की आँखों से आँसुओं की दो बूँद गालों से होते हुए विवान के यूनिफार्म पर जा गिरे। रीता ने इस्त्री से उनका गला घोंट दिया और सोचने लगी कि आखिर वह यहाँ रहने के लिए आई ही क्यों थी। वह विवान को तैयार करने लगी और सोचती रही कि प्रेम के मृत्यु के चार साल बाद तक जब वह बिलकुल अकेली रही तो आज वह वापस आई ही क्यों। फिर वह अपने भाग्य को कोसने लगी। उसने सोचा, "काश उसे नान्दी में किराए का घर मिल गया होता तो उसे ये बातें नहीं सुननी पड़ती।

रीता लबांसा के एक स्कूल में पढ़ाती थी। दो सप्ताह पहले ही उसका ट्रांसफर नान्दी के एक स्कूल में हुआ है। कहीं पर किराए का घर न मिलने पर वह अपने माता-पिता के घर आ गई थी और सोचा था कि घर मिलते ही वह चली जाएगी। उसका ससुराल राकीराकी में था। दूर का रास्ता होने के कारण वह वहाँ भी नहीं रह सकती थी।

रीता विवान को लेकर कमरे से ऐसे निकली जैसे उसने कुछ सुना ही न हो। वह भले ही बाहर से शांत है पर अपने दिलो-दिमाग में चल रहे तूफ़ान को सिर्फ वह ही मेहसूस कर सकती है। उसकी माँ की बातें उसके दिल में कब तक घर बनाए रहेगी यह तो सिर्फ वही जानती है।

उधर हर्षित प्रसाद खाकर सूवा के लिए रवाना हो चुका है। वह रास्ते भर यही सोच रहा है कि वह अपनी माँ के दिमाग से शुभ-अशुभ की बातें कैसे निकाले। कैसे बताऊँ उसे कि यह रीती-रिवाज़ इंसानों के बनाए हुए हैं। यदि इस दुनिया में कुछ प्रधान है तो वह प्रेम ही है। आपसी प्रेम ही लोगों को आपस में बाँध कर रखती है। इन्हीं विचारों में खोया हुआ वह सफर करता रहा।

देखते-देखते तीन दिनों की भागवत कथा संपन्न हुई और शादी के दिन आ गए। हर्षित का 'जेट लेग' भी अब कुछ ठीक होता दिख रहा है। या फिर यह भी हो सकता है कि शादी की ख़ुशी के कारण उसकी नींद गायब ही हो गई है। सभी ओर चहल-पहल मची हुई है। पड़ोस के तीन लड़के सजावट में लगे हुए हैं। रतीश यांगोना कुटवा कर थोड़ी ही देर पहले आया है। गाँव की कुछ महिलाएँ आशा के साथ मिठाई बना रही हैं। वहीं थोड़ी दूर पर हर्षित बैठा सुनीता द्वारा हाथों पर लगाए हुए मेहंदी को सुखा रहा है।

विवान वहीं अपनी रीता बुआ के गोद में बैठा मेहंदी लगते हुए देख रहा है। अभी उसकी माँ के हाथों पर मेहंदी लगाई जा रही है। विवान यह देख कर खुश हो रहा है। वह मेहंदी के एक बन्द कोन को रीता के हाथों पर घुमा रहा है।

"मम्मी के बाद आपकी बारी है न, बुआ?" उसने रीता से पूछा।
"नहीं," रीता ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।
"क्यों नहीं?" विवान ने एक और प्रश्न किया।
इससे पहले कि रीता कुछ कहती, सुनीता ने कहा, "क्योंकि रीता बुआ के घर के फूफा नहीं है।"
"फूफा तो आपके घर के भी नहीं है न, सुनीता बुआ?"

विवान ने मासूमियत से पूछा और थोड़ा रुककर उसने फिर कहा, "पर बुआ आपने तो सुबह माँ से मेहंदी लगवाई थी न।" सुनीता को समझ नहीं आया कि वह विवान से क्या कहे। आशा मिठाई बनाते हुए इनकी बातें सुन रही है। उसने विवान को मिठाई देने के बहाने से अपने पास बुला लिया।

विवान तो वापस खेलने में मगन हो गया पर सुनीता, रीता और हर्षित के दिमाग में एक ऐसा कीड़ा छोड़ गया जिसका रीता पर कोई ख़ास असर नहीं पड़ा। हर्षित बैठा मन ही मन मुस्कुरा रहा है क्योंकि जो बात वो अपनी माँ से नहीं कह सकता था वह विवान के जरिये उस तक पहुँच गई थी और अब वह उसी बात को दोबारा से उठा कर अपनी माँ से शुभ-अशुभ के चक्कर को छोड़ने की बात कर सकता है। विवान की बातों से अगर कोई परेशान थी तो वह थी सुनीता।

सुनीता का तलाक हुए अभी सात महीने ही हुए हैं। उसका पति अकाउंटेंट था। जब उसकी शादी हुई थी तो उसके सास-ससुर अपने बड़े बेटे-बहु के यहाँ रहते थे। उनके विदेश चले जाने के बाद दोनों अपने छोटे बेटे-बहु के पास रहने आ गए। सुनीता को एकल परिवार में ही रहने पसन्द था। सास-ससुर के आने से उसके और उसके पति के बीच अक्सर तू तू-मैं मैं होती रहती थी। सुनीता को लगता था कि जहाँ वे अक्सर बाहर खाया करते थे अब सास-ससुर की वजह से उसे हर दिन खाना बनाना पड़ेगा। ऐसी ही छोटी-छोटी बातों पर हमेशा लड़ाई होती और एक दिन दोनों ने फैसला किया कि अब वे साथ में नहीं रहे सकते। तलाक के बाद सुनीता अपने माता-पिता के घर चली आई थी।

तेलवान और प्रीतिभोज एक ही दिन है इसलिए भगदड़ ज्यादा है। घर के सभी लोग व्यस्त हैं। सुबह तेलवान की पूजा के बाद हर्षित को तेल लगाया गया। भाभियाँ हर्षित को तेल लगाते हुए छेड़ रही हैं। उधर बहनों की एक टोली इंतज़ार कर रही है कि कब उनकी बारी आए। हर्षित की नज़रें इन सब में सिर्फ एक व्यक्ति को ढूँढ़ रही है। उस दिन माँ की बातें सुनने के बाद उसे शक था कि वह बाहर नहीं आएगी और हुआ भी यही। तेल लगवाने के बाद प्रीतिभोज की रस्म शुरू होने से पहेले वह अन्दर आया। रीता को घर में न पाकर वह रसोई में गया तो देखा कि वह बुआ के साथ जूस बना रही है।

हर्षित से अब रहा नहीं गया। वह बिना कुछ बोले पलटा ही था कि देखा माँ उसे ढूँढ़ते हुए वहाँ आ पहुँची हैं। वह एक ज्वाला की तरह फूट पड़ा। "माँ ये सब क्या है? तुम कब अंधविश्वास के चक्कर से निकलोगी? हर बार व्यर्थ में शुभ-अशुभ के चक्कर में पड़ी रहती हो। आपकी वजह से रीता जीजी किसी भी कार्यक्रम में भाग नहीं ले रही। तुम कब समझोगी कि उसके साथ जो हुआ उसपर किसी का भी बस नहीं चल सकता था। सुनीता को देखो; अगर वह चाहती तो अपने घर को एक पल के लिए बचा भी सकती थी पर ये क्या करती? मौत से लड़ती? जो अपनी मर्ज़ी से अपने पति को छोड़कर आई है वह शुभ है और जहाँ भगवन की मर्ज़ी से घर टूटा है वह तुम्हारे लिए अशुभ हो गया। उस दिन विवान ने भी अपनी मासूमियत में बहुत बड़ी बात कह दी थी। मुझे लगा था कि शायद उसके बाद तुम रीता को खुद हर काम में भाग लेने के लिए कहोगी। हर्षित ने आशा को कुछ बोलने का मौका ही नहीं दिया। उसने आगे कहा, "यह शादी मेरी है। आगे जो होगा देखा जाएगा। अभी मुझे इतना ही पता है कि मैं अपनी बहन को हर कार्य में देखना चाहता हूँ।" इतना कह कर हर्षित वहाँ से चला गया।

आशा को शायद हर्षित की बातें समझ आ गई थी। उसने रीता के हाथ से क़्वेन्च की बोतल लेते हुए कहा, "मुझे माफ़ कर दो बेटी। आज मुझे पता चला कि मेरी सोच कितनी गलत थी। यह काम तुम्हारा नहीं है। इसे किसी और को करने दो। तुम्हारे भाई की शादी है। चलो उसे हल्दी लगाने की तैयारी करो।

शाम को हल्दी लगाने वाली टोली एक बार फिर तैयार हो गई है। इनमें सबसे आगे सुनीता जल छिड़कते हुए जा रही है। उसके पीछे रीता हाथ में सूप लिए और रीता के पीछे उसका भाई मंडप की ओर चला जा रहा है। आशा देवी ने अपनी साड़ी का पल्लू हर्षित के सिर से लगाया हुआ है । उनके पीछे बाकी बहनें और भाभियाँ हैं। सभी प्रसन्न दिख रही हैं।

****